# दीदी मनमोहिनी मन को मोह रही...

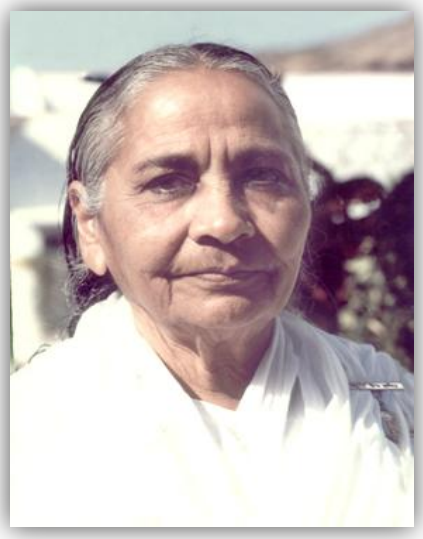

हर बात भूल जाये पर ये बात नहीं भूलेगी
दीदी-दादी की जोड़ी की तो याद नहीं भूलेगी...

बाबा ने दो कन्धों पर सेवा का भार डाला
दो देह मगर इक जान बन दोनों ने इसे संभाला
न्यारी प्यारी दो सखियों के प्यारे खेल निराले
ये तो उनका दिल जाने जो साथ में रहने वाले
किसको खबर हर दिल का हिमालय दीदी तू छू लेगी....

योग, पढ़ाई, सेवा सबमें तुम तो नम्बर वन थी
बाबा के आज्ञा पालन में भी पहला नम्बर थी
वो युक्तियुक्त प्रशासन, हर दिल पे तेरा शासन
सबको अनुशासन सिखलाने में भी पहला नम्बर थी
पर क्या मालूम था घर चलने में भी नम्बर ले लेगी....

अब घर जाना है- तुमने तो सबको यही सुनाया,
कहती ही नहीं थी दीदी तुमने करके भी दिखलाया,
गोद में बाबा के गोपी मस्तानी खेल रही हो
अब भी दीदी मनमोहिनी, मन को मोह रही हो
ये दुनिया तेरे साथ के दिन-रात नहीं भूलेगी.....